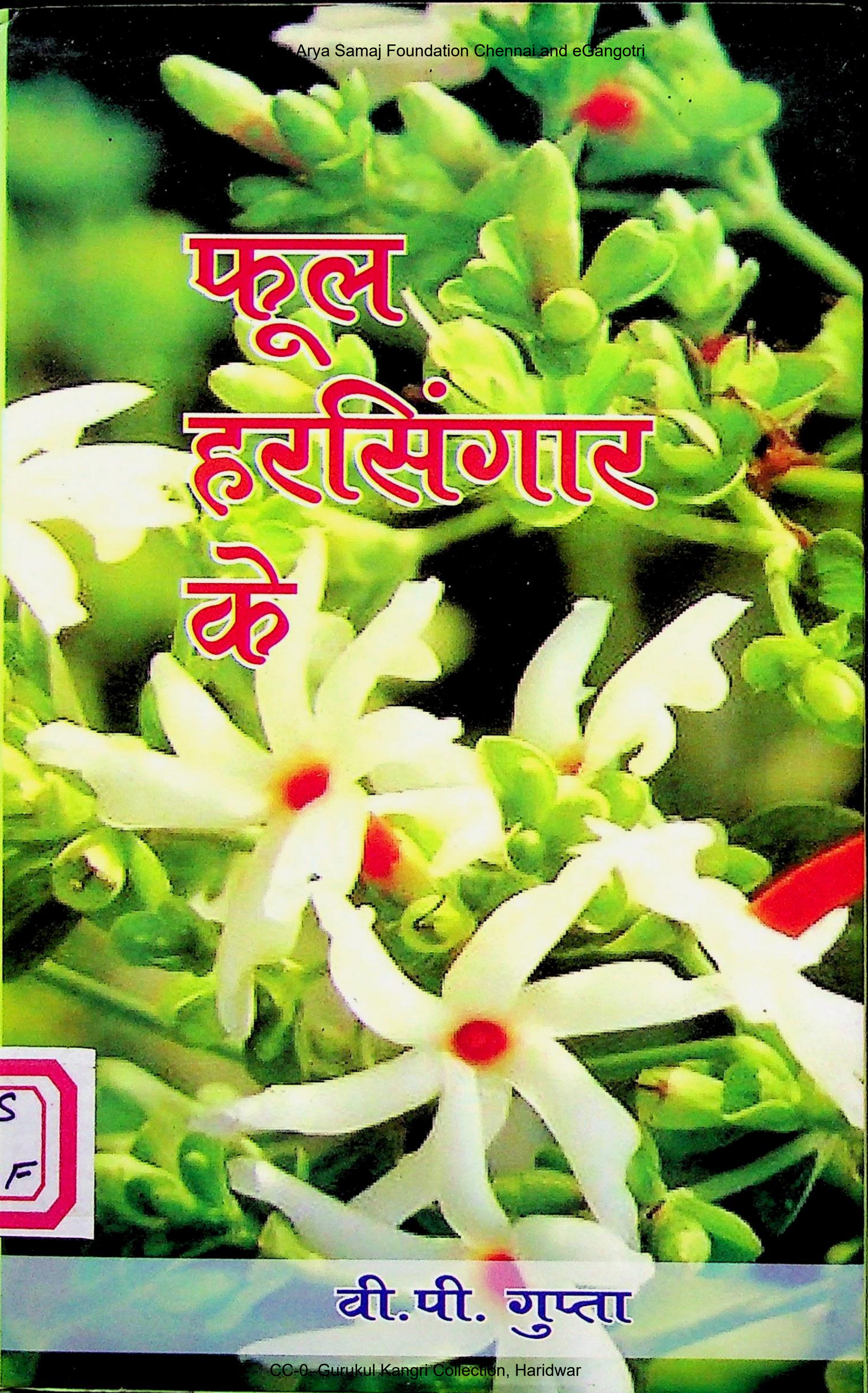


फूल हरसिंगार के

वी.पी. गुप्ता

'फूल हरसिंगार के'
एक सुवासित पुष्प-गुच्छ

प्रसिद्ध कवि व साहित्यकार श्री वी.पी. गुप्ता के नवीन काव्य-संग्रह 'फूल हरसिंगार के' में विविध रंग व सुगंध के पुष्प पाठकों को रस-सिक्त करने में एक दूसरे से होड़ करते दिखाई देते हैं। काव्य की विविध विधाओं, यथा- गीत, ग़ज़ल, दोहे, हाइकु, इत्यादि में कवि ने अपनी प्रतिभा की सुन्दर झलक दिखाई है। पुस्तक में संग्रहित सभी रचनाएं सशक्त और सरस बन पड़ी हैं। गुप्ता जी की रचनाओं में भाव, भाषा व काव्य-सौष्ठव के साथ ही सार्थकता और सकारात्मकता के दर्शन होते हैं, जिनसे इन रचनाओं की ग्राह्यता बढ़ गई है और वे हृदय के साथ-साथ मस्तिष्क को भी उद्वेलित करती हैं। श्री गुप्ता जी अंग्रेजी साहित्य के अच्छे ज्ञाता हैं और अंग्रेजी रचनाओं का हिन्दी में काव्यानुवाद करने में सिद्धहस्त हैं। प्रस्तुत संग्रह में उन्होंने गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर और भारत कोकिला सरोजिनी नायडु की अंग्रेजी रचनाओं का सुन्दर काव्यानुवाद प्रस्तुत करके पाठकों को उनका रसास्वादन कराया है।

मैं श्री गुप्ता जी की निम्न पंक्तियां उद्धृत करते हुए, उनकी रचनाधर्मिता को नमन करता हूं-

सुख-दुःख तो जैसे धूप-छांव
इस जीवन का ताना-बाना
दोनों का संग शाश्वत है
तो फिर दुख से क्या घबराना
तुम भले न सच स्वीकार करो,
मैं आंखें मूंद न पाता हूं।
मैं गीत धरा के गाता हूं।

-डॉ.योगेन्द्र प्रसाद
गोविन्दपुरी, चन्दक (बिजनौर)

फूल हरसिंगार के

(काव्य-संग्रह)



कवि परिचय

नाम: वी.पी. गुप्ता (पूरा नाम- वीरेन्द्र पाल गुप्ता)

जन्म: 07 जनवरी, 1935, बिजनौर (उ.प्र.)

पिता: स्व. राम चन्द्र गुप्ता (वकील)

माता: स्व. श्रीमती शान्ति देवी

शिक्षा: प्रारम्भिक शिक्षा बिजनौर में, आगे की शिक्षा देहरादून में। डी.ए.वी. कालेज, देहरादून से एम.ए. (अंग्रेजी), एम.ए. (समाजशास्त्र), बी.टी. (जो बाद में बी.एड. कहलाया)

लेखन: दो कविता-संग्रह, 'मधुबन' एवं 'फूल हरसिंगार के', तथा एक हास्य-व्यंग्य संग्रह 'ताल बेताल' प्रकाशित। हिन्दी व अंग्रेजी, दोनों भाषाओं में विभिन्न विषयों पर गद्य व पद्य में लेखन, स्तरीय पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशन, आकाशवाणी से समय-समय पर प्रसारण।

सम्प्रति: शिक्षण कार्य से अवकाश ग्रहण करने के पश्चात, पूर्णरूपेण पत्रकारिता एवं लेखन कार्य में रत।

पता: निकट अग्रवाल धर्मशाला,
जाटान स्ट्रीट, बिजनौर (उ.प्र.)
मोबाइल 9897673720

श्रेष्ठ साहित्यकार एवं उद्भट विद्वान,
परम आदरणीय डॉ० रामस्वरूप आर्य जी को
सादर
वी.पी. गुप्ता
25 मार्च, 2016

फूल हरसिंगार के

(काव्य-संग्रह)

वी.पी. गुप्ता

प्रकाशक
अविचल प्रकाशन
'साहित्य-पूर्वा', 2/III हाइडिल कालोनी, बिजनौर (उ.प्र.)

ISBN.978-93-84214-25-8

प्रकाशक: अविचल प्रकाशन, 2/III हाइडिल कालोनी, बिजनौर-01 (उ.प्र.) शाखा: वृन्दा विहार, (काठगोदाम बायपास), ऊँचापुल, हल्द्वानी (उत्तराखण्ड). मो. 9411883705. **कृति:** फूल हरसिंगार के. **कवि:** वी.पी. गुप्ता. **संस्करण:** प्रथम-2016. **आवरण:** सतपाल. **संयोजना:** सिद्धान्तिका ग्राफिक्स, बिजनौर. **प्रूफ रीडिंग-** रचनाकार. **मुद्रक:** भगवती प्रिंटर्स, मेरठ. **उत्तरदायित्व:** कवि. **मूल्य:** 125/-

E Mail. avichalprakashan@gmail.com

Phool Harsingar Ke : By V.P.Gupta

'फूल हरसिंगार के'

कविता का निजी ताना-बाना

(गीत, भाव, अनुभूति)

मनुष्य की प्रवृत्तिमूलक सहज संचेतना का नाम कविता है। स्वाभाविक संचेष्टा को पहचानने और अभिव्यक्ति देने की क्रिया ही कविता है। मानुषी आस्थाएं जो इस संचेष्ट से उपजती हैं, कविता की अन्तर्वस्तु बनती हैं। मनुष्य की आस्थाएं उसकी मूल प्रवृत्तियों से बनती हैं और प्रायः एक जैसी होती हैं, फिर भी कई बार सामयिक दवाबों के तहत उनका प्रारूप या बाह्य आकृति बदल जाती है या बदली सी लगती है। आज जो प्रश्न कविता के सामने है वह यह है कि बौद्धिक सोच के लिए कविता में कितनी जगह है। पंत जी ने लिखा है- 'वियोगी होगा पहला कवि, आह से उपजा होगा गान।' क्या यही कविता का शुद्ध रागात्मक भाव है? हमें इस भ्रम में नहीं रहना चाहिए कि कविता और चिन्तन दो विरोधी क्रियाएं हैं। सच तो यह है कि अभिव्यक्ति शुद्ध भावना में करना असंभव नहीं तो अत्यन्त कठिन अवश्य है। किसी भी भावानुभूति को गहराने के लिए कुछ अन्तराल की आवश्यकता होती है। इस अन्तराल में अनुभूतियां चिन्तन के फिल्टर से छन कर गुजरती हैं। भावनाओं का यह रासायनिक संस्कार उन्हें भाव-चिन्तन का संश्लिष्ट रूप प्रदान कर देता है। यही भाव चिंतन कविता की अन्तर्वस्तु होता है।

कविता के उपर्युक्त सभी पक्ष श्री वी.पी. गुप्ता के कविता-संग्रह 'फूल हरसिंगार के' से जुड़े हैं। संग्रह में गीत, ग़ज़ल, दोहे, हाइकु, इत्यादि काव्य के विभिन्न रूप प्रस्तुत हैं। अंग्रेजी साहित्य कवि का मुख्य अध्ययन विषय रहा है। इसकी झलक के रूप में गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर और भारत-कोकिला सरोजिनी नायडू की कतिपय अंग्रेजी रचनाओं का हिन्दी काव्यानुवाद भी कवि ने इस संग्रह में दिया है।

कविता-संग्रह की प्रथम रचना, 'फूल हरसिंगार के' में कवि ने बिम्ब और अलंकार का सुन्दर प्रयोग किया है-

सुन्दर सी अंजुरी में झिलमिल-से मोती भर
बरसाये प्यार से प्रेयसी ज्यों साजन पर
मद भरी रिमझिम में सुध-बुध बिसर गई
नाच उठा मन-मयूर, स्रोत रसधार के,
फूल हरसिंगार के।

जीवन को देखने का कवि का दृष्टिकोण यथार्थ परक है। एक रचना को देखें-

सुख-दुःख तो जैसे धूप-छांव, इस जीवन का ताना-बाना
दोनों का संग शाश्वत है, तो फिर दुःख से क्या घबराना?

वी.पी. गुप्ता जी की रचनाओं में मानवीय जीवन, उसकी बहुआयामी छवि तथा मानवीय राग-विराग का प्रतिबिम्ब देखने को मिलता है-

'अर्जन में ही बीत गया दिन
तपा धूप में तन छाया बिन
बाट जोहता सूर्यास्त की
थकित हुआ मन भी हर पल-छिन
पंछी भी उड़ चले नीड़ को
जहां प्यार ही प्यार मिले,
लौट भी चल घर, सांझ ढले।'

इसी क्रम में, निम्न रचना भी भावों की सशक्त अभिव्यक्ति है-

आगे बहुत बढ़ा है मानव, पर कुछ लगता है ऐसे
बाहरी यह सब चमक-दमक है, मन बदरंग हुए जैसे।

श्रमिकों के प्रति अपनी आस्था, संवेदना और निष्ठा को व्यक्त करते समय श्री वी.पी. गुप्ता का जनवादी-जैसा स्वर मुखर हो उठता है। किसान के परिश्रम की सराहना करते हुए वे कहते हैं-

मैं कैसा कवि? कवि तो वह है
रचता जो खेतों में कविता
नग्न बदन श्रम-स्वेद बहाता
धरती को उर्वरा बनाता
स्वयं अभावों में जी कर जो
सबके लिए अन्न उपजाता।

वर्तमान समय में सच कहना खतरों से भरा है, लेकिन कवि अपने भावों को निडरता से व्यक्त करता है। यह उसकी कवि-कर्म मूल्यबोध के प्रति निष्ठा का भाव है। संग्रह में दिये गये एक हायकु में कवि ने कहा भी है-

कवि तो वही
बिना किसी भय के
कहे जो सही

इसी निर्भीकता का परिचय देते हुए, वह आज के व्यक्ति के बारे में स्पष्ट रूप से कहता है-

चतुर्दिक विस्तार पाते इस जगत में
दृष्टि उसकी संकुचित क्यों हो गई है?
बाह्य आडम्बर अधिक मुखरित हुए हैं
हार्दिक अनुभूति सीमित हो गई है

अपने ही दुष्चक्रों में आज फंस,
खण्ड-खण्ड बिखर रहा है आदमी।
स्वयं से ही डर रहा है आदमी।

गीत लिखना, विशेषकर प्रेम गीत लिखना तलवार की धार पर चलने जैसा है। आनन्दातिरेक और मर्यादा के बीच की पतली धार बहुत पैनी होती है। कवि ने मानव संवेदनाओं को व्यापक रूप से उकेरा है-

रूप-रस के मोह में वश में हुए, तो प्रीत क्या?
स्वयं समर्पण कर दिया जब प्रेम से, तो जीत क्या?
बिन परिश्रम के मिला फल, स्वाद मय होता नहीं
उर-व्यथा जिसमें न हो मुखरित, भला वह गीत क्या?

कवि ने प्रस्तुत संग्रह में मानवीय सरोकार के अनेक बिन्दुओं को छुआ है।

पर्यावरण-प्रदूषण की वर्तमान भयावह परिस्थिति पर कवि कहता है-

विहरो, पंछी, सावधान हो नील गगन में
मानव की कैसी नादानी
प्रकृति से कितनी मनमानी
ऊपर नभ भी किया प्रदूषित
विषमय किया वायु और पानी
चारों ओर भय की छाया
नीचे, ऊपर, जल में, थल में।

श्री वी.पी. गुप्ता ने कुछ गीतिकाएं भी लिखी हैं, आप चाहें तो उन्हें ग़ज़ल के आसपास रख सकते हैं। उदाहरण के लिए-

सदा संग अपने उजाले रखिए
अंधेरे में खुद को सम्हाले रखिए

और, यह भी देखें-

अब न है अपनत्व, न सद्भावना है
प्रेम की ऐसे में न कुछ सम्भावना है।

कवि ने संग्रह में कुछ हाइकु भी दिए हैं जो भावोभिव्यक्ति में बहुत सफल हुए हैं–

जीवन बीता
मगर ज्ञान घट
रहा है रीता।

कहां से आये
जायेंगे कहां हम
जान न पाये।

बिटिया के महत्त्व के बारे में लिखा यह हाइकु बहुत सुन्दर बन पड़ा है–

शोभा घर की
बेटी लाये खुशियां
जग भर की।

और, नारी दशा का यह हायकु भी–

आंसू बहते
अबला हृदय की
व्यथा कहते।

निर्विवाद रूप से सभी हाइकु अपनी सम्प्रेषणीयता में पूर्ण रूप से सफल हैं।

श्री वी.पी. गुप्ता अंग्रेजी साहित्य से भी गहरा जुड़ाव रखते हैं। उन्होंने बहुत लम्बे समय तक अंग्रेजी भाषा व साहित्य का शिक्षण किया है। असल में, हिन्दी व अंग्रेजी दोनों भाषाओं पर उनकी समान रूप से पकड़ है, इसीलिए दोनों भाषाओं में ही उनका लेखन

प्रभावशाली है। इसके लिए गुप्ता जी को बधाई। अंग्रेजी साहित्य के कई दिग्गज कवियों की कविताओं का उन्होंने हिन्दी भाषा में साधिकार काव्यानुवाद किया है। गुरुदेव टैगोर की रचना Where the Mind is without Fear के सुन्दर पद्यानुवाद में मूल अंग्रेजी कविता के भाव-बिम्ब उसी रूप में प्रस्तुत किये गये हैं-

जहां गर्व से सिर उन्नत हो,
मन और वाणी सत्य-सिक्त हो,
जहां न विश्व संकीर्ण हितों में
खण्ड-खण्ड होकर विभक्त हो।'

टैगोर की एक अन्य रचना Playthings को भी देखें-

जीर्ण नाव में जूझ रहा हूं
तरने इच्छाओं का सागर
और भूल जाता हूं यह मैं
खेल ही तो है जीवन मेरा।

इसी प्रकार, महान कवयित्री सरोजिनी नायडू की अंग्रेजी कविताओं का हिन्दी में काव्यानुवाद करते समय गुप्ता जी का शब्द-संयोजन देखते ही बनता है। उनके शब्द भावों की मेज़बानी करते नज़र आते हैं। कवयित्री की एक प्रसिद्ध रचना The Coming of Spring के काव्यानुवाद की कुछ पंक्तियां देखें-

हे बसन्त! अब नहीं ललक कर
मैं कर पाऊंगी अभिनन्दन
जैसा में करती थी पहले
पहन चमकती साड़ी स्वर्णिम,
चम्पा की कलियां, गेहूं की
लहराती बालें कर में ले,

चांदी के घुंघरू पैरों में
बजते जाते झनन, झनन, झन।'

और, The Poet to Death के काव्यानुवाद की ये पंक्तियां भी अत्यन्त सुन्दर बन पड़ी हैं–

मृत्यु, ठहर जा तनिक
अभी मैं मर न सकूंगी
मेरे जीवन में बहार बसन्ती छायी
महक रही मेरी यह अभिनव तरुणाई
गूंज रहीं चिड़ियों की मीठी तानों से
लदी हुई डालें, फूलों से बौराई
विस्मृत इनको कर न सकूंगी
ठहर, अभी मैं मर न सकूंगी।

मेरा विश्वास है कि काव्य-संग्रह **'फूल हरसिंगार के'** काव्यानुरागी पाठकों के अन्तर्मन को तरंगित करेगा। आज की कविता में जो तरह-तरह की व्यस्तताएं हैं, उनसे भी गुप्ता जी की रचनाएं हमें अवगत कराती हैं। कवि की इस सामर्थ्य और पहचान को नये-नये आयाम मिलें, मेरी यही शुभकामनाएं हैं।

–डॉ. ज्ञानेशदत्त हरित

175, **ग्रेटर गंगा**
गंगानगर, मेरठ
मो. 9837280720

दो शब्द

कविता, कम से कम मेरे लिए, हृदय में परिस्थिति जन्य भावोद्गार का स्वतः प्रवाह है और इस भावोद्गार को उपयुक्त शब्दों का बाना धारण कराना कवि का कार्य है। हृदय में स्वतः भाव उमड़ते हैं और कविता का जन्म होता है। कविता सृजन में बिना भावनाओं के प्रवाह के, कवि का प्रयास प्रभावोत्पादक नहीं हो सकता। कविता लेखन मेरे लिए स्वान्तः सुखाय रहा है। हृदय में उठे भावों के अनुसार कुछ लिख लेता हूं और गुनगुना लेता हूं। मुझे तुकान्त कविताएं ही आनन्द देती हैं। उनकी लय और गेयता मुझे आकर्षित करती है।

प्रस्तुत कविता-संग्रह **'फूल हरसिंगार के'** में विविध विषयों पर मेरी कविताएं संग्रहित हैं। ये कविताएं गीत, ग़ज़ल, दोहे, इत्यादि के रूप में प्रस्तुत की गई हैं। साथ ही मैंने अपने कुछ 'हाइकु' भी जो सत्रह अक्षरीय, तीन पंक्ति के लघु छंद होते हैं, दिये हैं जो अन्य रचनाओं के समान ही तुकान्त हैं। अंतिम पृष्ठों में दो महान भारतीय कवियों, गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर और भारत-कोकिला सरोजिनी नायडु की प्रसिद्ध अंग्रेजी रचनाओं का तुकान्त काव्यानुवाद भी दिया है। अंग्रेजी कविताओं का हिन्दी में काव्यानुवाद करना मुझे आरम्भ से ही प्रिय रहा है।

मेरे प्रथम कविता-संग्रह **'मधुबन'** और इस दूसरे कविता संग्रह **'फूल हरसिंगार के'** के प्रकाशन के बीच का अन्तराल कुछ लम्बा हो

गया। पर, इस अवधि में मेरा गद्य-लेखन कार्य निरन्तर चलता रहा और विभिन्न साहित्यिक व सामाजिक विषयों पर मेरे लेख, निबंध, समीक्षाएं, हास्य-व्यंग्य इत्यादि, विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहे। इस बीच, एक हास्य-व्यंग्य संग्रह 'ताल बेताल' भी प्रकाशित होकर पाठकों के हाथों में पहुंच चुका है।

मैं हिन्दी के सुप्रसिद्ध गीतकार, वरिष्ठ शिक्षाविद् एवं साहित्य मर्मज्ञ डॉ. ज्ञानेशदत्त हरित का हृदय से आभारी हूं जिन्होंने प्रस्तुत कविता संग्रह की इतनी सटीक भूमिका लिखकर मुझे उपकृत किया है।

साथ ही, मैं अपने विद्वान साहित्यकार मित्रों, डॉ. गजेन्द्र बटोही का उनके इस पुस्तक के सुन्दर प्रकाशन में परिश्रम के लिए और डॉ. योगेन्द्र प्रसाद का इस संग्रह पर अपनी सम्मति देनें के लिए, आभार व्यक्त करता हूं।

विविध रंगों में रंगे अपने इस कविता-संग्रह को अपने सुविज्ञ एवं कवि-हृदय पाठकों के हाथों में सौंपते हुए मैं सन्तोष का अनुभव कर रहा हूं।

जाटान स्ट्रीट,
बिजनौर (उ.प्र.) **वी.पी. गुप्ता**

अनुक्रम

1

आंगन में झर रहे फूल हरसिंगार के
मन मुदित कर रहे गीत बन बहार के।

स्थिर शान्त कोने में सहज सौम्य भाव से
प्यार सबको बांट रहा वृक्ष बड़े चाव से
स्थल सुरम्य हुआ, वातावरण रमणीक
उल्लसित हुआ हृदय, पात्र ये दुलार के।
आंगन में झर रहे फूल हरसिंगार के।

सुन्दर-सी अंजुरी में झिलमिल-से मोती भर
बरसाये प्रेयसी ज्यों प्यार से साजन पर
मद भरी रिमझिम में सुध-बुध बिसर गई
नाच उठा मन-मयूर, स्रोत रसधार के।
आंगन में झर रहे फूल हरसिंगार के।

चांदनी रात में विरही मन की दशा
देख फूल भी दुखी प्रेमी उर की व्यथा
शमन किसी भांति हो उनकी यह वेदना
दूत बन ला रहे, ये संदेशे प्यार के।
आंगन में झर रहे फूल हरसिंगार के।

2

तुम सपनों से प्यार करो, मैं गीत धरा के गाता हूं

सुख-दुःख तो जैसे धूप-छांव इस जीवन का ताना-बाना
दोनों का संग शाश्वत है, तो फिर दुख से क्या घबराना
तुम भले न सच स्वीकार करो, मैं आंखें मूंद न पाता हूं।
मैं गीत धरा के गाता हूं।

तुम बने उपासक वैभव के, निर्धनता देख नहीं पाते
ऊंचे महलों के साये में टूटे जर्जर घर छिप जाते
तुम जिस प्रगति पर नाज़ करो, मैं उसे पतन बतलाता हूं।
मैं गीत धारा के गाता हूं।

तुम चुनते केवल वे राहें जो हों फूलों से महकाती
पतझर, सूखे से विहीन, निशिदिन हरियाली सरसाती
तुम फूलों से अभिसार करो, मैं कांटे भूल न पाता हूं।
मैं गीत धरा के गाता हूं।

धन की जग-मग है चार दिवस, रातें लम्बी निर्धनता की
सुख के सपने तो क्षण-भंगुर, घड़ियां हैं कठिन विपन्नता की
तुम सब कुछ सुख पर वार करो, मैं पीड़ा को सहलाता हूं
मैं गीत धरा के गाता हूं।

3

लौट भी चल घर, सांझ ढले,
आंगन टेरे, दीये जले।

अर्जन में ही बीत गया दिन
तपा धूप में तन, छाया बिन
बाट जोहता सूर्यास्त की
थकित हुआ मन भी हर पल-छिन
पंछी भी उड़ चले नीड़ को
जहां प्यार ही प्यार मिले
लौट भी चल घर, सांझ ढले।

चमक-दमक की बाहरी दुनिया
रंग-रूपहली न्यारी दुनिया
धन के गिर्द बुने सब रिश्ते
धन पर ही बलिहारी दुनिया
अपनों की ही त्याग मयी
बाहों में निश्छल प्यार मिले।
लौट भी चल घर, सांझ ढले।

दौड़-भाग में व्यस्त है जीवन
अधिक-अधिक में त्रस्त है जीवन
औरों से आगे बढ़ने की
निरत होड़ में पस्त है जीवन
मन का चैन मिलेगा घर में
ममता की ही छांव तले
लौट भी चल घर, सांझ ढले
आंगन टेरे, दीये जले।

4

आगे बहुत बढ़ा है मानव
पर, कुछ लगता है ऐसे
बाहरी यह सब चमक-दमक है
मन बदरंग हुए जैसे।

जीवन बीत रहा जमघट में
घेरे, पर, तन्हाई है
चेहरे पर मुस्कान, दिलों में
अजब उदासी छाई है
नाटक के पात्रों के से
कल्पित सम्बंध हुए जैसे
बाहरी यह सब चमक दमक है
मन बदरंग हुए जैसे।

व्यर्थ रहे मेले, उत्सव
यदि हृदय उमंग से खिला नहीं
रस्म मात्र मिलना-जुलना
यदि मन अंदर से मिला नहीं
अंदर कुछ, बाहर कुछ, दुनिया
के रंग-ढंग हुए ऐसे
बाहरी यह सब चमक दमक है
मन बदरंग हुए जैसे।

सतत

अपनों से आगे बढ़ने की
निरत होड़ है लगी हुई
पाकर सब कुछ तृप्त न होती
तृष्णा ऐसी जगी हुई
असंतोष और कुंठा, जीवन
के अब अंग हुए ऐसे
बाहरी यह सब चमक दमक है
मन बदरंग हुए जैसे।

5

मैं कवि केवल शब्द, भाव का
प्रेम-विरह का, रुदन-आह का
बैठ कक्ष में वर्णन करता,
शीत-घाम का, धूप-छांव का।

मैं कैसा कवि?कवि तो वह है
रचता जो खेतों में कविता
नग्न बदन श्रम-स्वेद बहाता
धरती को उर्वरा बनाता
स्वयं अभावों में जीकर, जो
सबके लिए अन्न उपजाता
वह सच्चा कवि, उसकी कविता
पोषण करती नगर, गांव का।
मैं कवि केवल शब्द, भाव का।

मैं कैसा कवि?कवि तो वह है
रचता कर्म क्षेत्र में कविता
धर्म समझ निज कर्म निबाहता
सेवा अपना लक्ष्य बनाता
कर्त्तव्य को यज्ञ मानकर
जीने की जो राह दिखाता
वह सच्चा कवि, उसकी कविता

बनी मार्ग-दर्शक समाज का।
मैं कवि केवल शब्द, भाव का।

मैं कैसा कवि?कवि तो वह है
रचता सीमाओं पर कविता
दुर्गम में जाकर डट जाता
चट्टानों-सा वह अड़ जाता
मातृ भूमि का सजग प्रहरी
सीने पर वह गोली खाता
वह सच्चा कवि, उसकी कविता
कवच बनी है देश-राष्ट्र का।
मैं कवि केवल शब्द भाव का।

6

कौन से अपराध का यह बोध है
स्वयं से ही डर रहा है आदमी।

शून्य से प्रारम्भ कर, नित अग्रसर
गति न जिसकी मंद हो पाई कभी
कठिनतम पथ पर बढ़ा जाता निरंतर
कोई बाधा रोक न पाई कभी
कौन-सी व्यथा उसे विचलित किये है
आज इतना झुर रहा है आदमी
स्वयं से ही डर रहा है आदमी।

सत्य क्या है, क्या असत्य, क्या पता,
धुंध ने चिंतन की धारा ही बदल दी
स्वार्थ को दृष्टि में रख संबंध बनते
समय ने रिश्तों की परिभाषा बदल दी
हो गया मस्तिष्क हावी अब हृदय पर
गणित के बल चल रहा है आदमी
स्वयं से ही डर रहा है आदमी।

चतुर्दिक विस्तार पाते इस जगत में
दृष्टि उसकी संकुचित क्यों हो गई है
बाह्य आडंबर अधिक मुखरित हुए हैं
हार्दिक अनुभूति सीमित हो गई है
अपने ही दुष्चक्रों में आज फंस
खंड-खंड बिखर रहा है आदमी
स्वयं से ही डर रहा है आदमी।

7

विहरो, पंछी, सावधान हो नील गगन में।
मानव की कैसी नादानी
प्रकृति से कितनी मनमानी
ऊपर नभ भी किया प्रदूषित
विषमय किया वायु और पानी
चारों ओर भय की छाया
नीचे, ऊपर, जल में, थल में।
विहरो, पंछी, सावधान हो नील गगन में।

इस बदले युग में दूभर है अब तो जीना
ऋतुएं भी भूली-सी लगती हैं क्रम अपना
शीत, घाम, बादल और बरखा
मन-मरजी से आते-जाते
अमराई में तीज के झूले, सावन गीत बने अब सपना
नदियों में बहता खारा जल
झंझावात चले उपवन में।
विहरो, पंछी, सावधान हो नील गगन में।

श्यामल से लगते सफेद टुकड़े बादल के
श्वेत वकुल के पंख आज लगते धूमिल से
चिड़ियों की कलरव भी देती नहीं सुनाई
हरे खेत भी खो बैठे निज आभा जैसे

मंद-सुंगध बयार को तरसे
मन इस घुटन भरे जीवन में
विहरो, पंछी, सावधान हो नील गगन में।
कहां गई कोयल की कुहुकन
वासन्ती मौसम की थिरकन
सौंधी-सी खुशबू मिट्टी की,
सूखे ताल-तलैया जल बिन
क्यों हमने ही आग लगाई
अपने इस नन्दन कानन में
विहरो, पंछी, सावधान हो नील गगन में।

8

खोल पाट गेह के
नेह से निहार पथ
मीत आके लौट ही
न जाये कहीं द्वार से

बह रहा मन, प्राण, देह
झकझोरता पागल पवन
आ गया फूलों के लेकर
वाण, मदमाता मदन
घिर रहे भौंरे रसिक भी
रूप-रस के पान हित
लाज अवगुंठित कली का
प्रेम-पुलकित है बदन
हृदय में पिय के घिरे
सन्देह तो आश्चर्य क्या
है बड़ा दुष्कर, बचाना
मन मदन की मार से।
मीत आके लौट ही
न जाये कहीं द्वार से।
रूप-रस के मोह में
वश में हुए तो प्रीत क्या
स्वयं समर्पण कर दिया जब

प्रेम से, तो जीत क्या
बिन परिश्रम के मिला फल
स्वाद मय होता नहीं
उर-व्यथा जिसमें न हो
मुखरित, भला वह गीत क्या
हृदय में कभी जीत भी
चुभती अधिक है हार से।
मीत आके लौट ही
न जाये कहीं द्वार से।

9

मूढ़, प्रभु से प्रार्थना करता शीश नवाय
प्रभुवर! केवल पुत्र दो, कन्या कभी न आय

सोच यदि हो जाये सच, कन्या-जन्म ही बंद
फिर कहां तू पायेगा पुत्रवधु, मतिमंद

मां, पत्नी, बेटी, बहन, फिर तू कैसे पाये
बिन नारी परिवार तो स्वप्न मात्र रह जाये

घर में बेटी होय तो सुधर जाये माहौल
सतर्क रहें व्यवहार में, भाषा बोलें तौल

बहुधा बेटे पर सभी देते लाड़ लुटाय
पढ़-लिख जब होवे बड़ा, बाहर जा बस जाये

बंगला, गाड़ी, सम्पदा, सब बेटे के नाम
बेटी को तो ऋण समझ करते कन्यादान

पुत्र दिखाये बेरुख़ी, कभी अभद्र भी होय
बेटी निज ससुराल में, तेरे दुःख में रोय

अभी समय है चेत जा, अपनी सोच सुधार
पुत्र-पुत्री दो आंख हैं, दोनों की दरकार,

10

ऐसा गीत सुनाओ, पीर हर जाये
ऐसा साज़ बजाओ, शून्य भर जाये

प्यासा चातक घूम रहा मैं
लेकर प्यास जनम की
सावन बीत गया, पर मेरी
गई तपन न मन की
ऐसी घटा बुलाओ, तृप्त कर जाये

तूफानों ने अडिग किया
दुर्गम ने दुलराया
बाधाओं ने बड़ा किया
कष्टों ने अपनाया
ऐसी राह दिखाओ, लक्ष्य पर जाये

जीवन सारा बीत गया
सपनों के बुनने में
मन भी कब का ऊब गया
लहरों के गिनने में
ऐसा स्वप्न सजाओ, सत्य बन जाये
नदियां कितनी गहरी हैं

इसका आभास मुझे
पर, अपनी बाहों की शक्ति
पर विश्वास मुझे
ऐसी लगन जगाओ, नाव तर जाये
ऐसा गीत सुनाओ, पीर हर जाये

11

ज़िन्दगी अक्सर अंधेरों में
भटक जाती क्यों है?
रोशनी का सामना करने से
घबराती क्यों है?

यूं तो कहते, बेटियां
लाती हैं घर में रौनकें
बेटियां लाने पर, मां फिर
झिड़कियां खाती क्यों है?

मानसिकता को हमारी
हम न समझे आज तक
दूसरों को सीख अपनी
खुद को अनभाती क्यों है?

खेलते बचपन में थे हम
मिट्टी, कंकड़, रेत से
अब कहां, अब तो नज़र, बस
ज़र ही पै जाती क्यों है?

जानते हैं हम बखूबी
ज़िन्दगी की असलियत
सुनहले सपने दिखा, यह
हम को भरमाती क्यों है?

12

मार्ग बहुत ही कण्टक मय है,
मुझको यह आभास तो है
मेरे कदमों को भी मंजिल
पाने का अभ्यास तो है

दुनिया मुझको कुछ क्या देती
उलटे सब कुछ छीन लिया
नीड़ नहीं न सही, मगर
सिर पर नीला आकाश तो है

सर्द हवाओं के झोंकों से
फूल-पात सब त्रस्त हुए
उपवन के द्वारे से लेकिन
झांक रहा मधुमास तो है

नियति के प्रतिकूल प्रहारों
और समय के वारों से
जीर्ण हुआ है तन, पर मन में
कुछ करने की प्यास तो है

नभ के धूमिल हो जाने से
मेरा मन बोझिल क्यों हो?
कुहरा छंट कर धूप खिलेगी
मुझको यह विश्वास तो है

13

ज़िन्दगी नीरस सही, पर
हमको ललचाती तो है
बुझ रहे दीपक में भी
आखिर हुमक आती तो है

यहां नहीं तो वहां सही
बरसे कहीं भी, दोस्तों
हम तलक भीगी हुई
ठण्डी हवा आती तो है

लड़ रहा है कितने साहस से
अंधेरे से दीया
है ज़रा सी रोशनी, पर
दूर तक जाती तो है

दिल में जीने की तमन्ना
किस क़दर है, देखिये
तेल सारा चुक गया
सुलगी मगर बाती तो है

जगमगाहट से खिंचे वो
जा बसे परदेस में
अपनी मिट्टी की सुगंध अब
उनको तड़पाती तो है।

14

सदा खुले में रात गुज़ारी
ऊपर नील गगन देखा है
बेघर ने तो सिर पर अपने
छत का महज़ सपन देखा है

पेट की ख़ातिर कूड़ा चुगते
अध-नंगे बच्चे देखे
हमने बिना खिले मुरझाता
बेबस बचपन देखा है

सभी धर्म के लोग जहां पर
हिलमिल प्यार से रहते हैं
दुनिया भर में हमने केवल
अपना यही वतन देखा है

पैसा आज प्रमुख हो गया
नाते-रिश्ते गौण हुए
भाई बनते हुए पड़ौसी,
बंटता हुआ सहन देखा है

मां के चरणों में हो जायें
बार-बार नतमस्तक हम
त्याग, तपस्या, ममता देखी
उसका पावन मन देखा है।

15

सदा संग अपने उजाले रखिये
अंधेरों में खुद को सम्हाले रखिये

सपनों की दुनिया नहीं है हक़ीकत
मन में भरम को न पाले रखिये

अपनी तरफ से क़सर छोड़िए ना
बाक़ी सब उसके हवाले रखिये

कब तक सहे जाओगे ज़ुल्म उनके
छलकते हुए सब्र के प्याले रखिये

संभव नहीं भावनाओं पै बन्दिश
कितनी ही जंजीर डाले रखिये

सदा संग अपने उजाले रखिये
अंधेरों में खुद को सम्हाले रखिये

16

कैसा हमारी प्रीति का प्रतिदान मिला है
कुछ दण्ड ही मिला, न क्षमा दान मिला है

कुछ ऐसे यक्ष-प्रश्न भी सम्मुख हैं हमारे
जिनका कभी न कोई समाधान मिला है

शंकाओं का हुआ है न अब तक भी निवारण
इसमें सफल न कोई अनुष्ठान मिला है

आंखों में हमारी सुखद स्वप्न बसे हैं
उनको कभी न मान, न सम्मान मिला है

दो नावों में किसी ने यदि पैर जो रखे
माया मिली न उसको, न भगवान मिला है

कई बार ज्ञानवान भी जब मौन हो गये
अल्पज्ञों से हमको दिशा ज्ञान मिला है

जीवन में किसी को न मिला पथ सरल कभी
संघर्ष बिना किसी को न उत्थान मिला है

17

नई डगर पर नई सोच को
लेकर अपने साथ चलें
नई उमंग से जीवन को
जीने की ले अभिलाष चलें

जिन बातों पर लज्जित है मन
दु:स्वप्न-सा बिसरायें
नई किरण की नई रोशनी
लेकर नया प्रभात चलें

जन-जन के मानस में झांकें
नव आशा संचार करें
नई चेतना लाने को, मन
में ले दृढ़ विश्वास चलें।

भौतिकवादी आकर्षण में
दिशा शून्य हो, भ्रमित हुए
अपना संस्कृति-सुरभित चंदन
धारण कर निज माथ चलें

दंभ, अहं, मिथ्याभिमान की
संकरी गलियों से बचते
उज्ज्वल कल के स्वप्न संजोये
ले हाथों में हाथ चलें

18

अब न है अपनत्व, न सद्भावना है
प्रेम की ऐसे में, न कुछ सम्भावना है

स्नेह की बाती हृदय में बुझ गई है
चुक गई सम्वेदना भी, तम घना है

गौण होते जा रहे संबंध सारे
संपदा-संचय में अब तो मन रमा है

छू रहा मानव है नित ऊंचाइयां
हृदय की ऊंचाई में बौना बना है

आचरण दूषित हुआ देखें जिधर भी
हर किसी का वस्त्र कीचड़ में सना है

रक्त का नाता कहावत रह गया है
आज भाई, भाई के सम्मुख तना है

प्रसन्न हैं रहकर अकेले दूर सबसे
बड़ों को अब साथ रखना कल्पना है,

रेत और सीमेंट से बनते भवन हैं
घर परस्पर प्रेम से मिलकर बना है

19

बहुत थक लिया, छोड़ नगरिया
लौट चलें आ, गांव डगरिया

धरती से ऊपर अंबर तक
आसपास से दूर-दूर तक
चहुं ओर विचरण कर सकती
बिन बाधा के, मुक्त नज़रिया

धूप सुनहरी, हवा है न्यारी
प्रकृति-अंक में बस्ती सारी
सीधा-सादा निश्छल जीवन
हिल-मिल बीते सभी उमरिया

वहां पसीना उपजाता अन्न
सारे जग का करता पोषण
खेतों में जीवन मुस्काता
ओढ़े पीली-हरी चुनरिया

आदर पाती आयु, नहीं धन
सबका रिश्तों से संबोधन
गांवों में दिखती सम-रसता
घर, झोंपड़, या होय अटरिया

गांवों में व्यवसाय पनपें
तो फिर क्यों युवा यों भटकें
यही कमायें रोटी-रोज़ी
क्यों ढूंढें जा शहर नौकरिया

20

मिथ्या है संसार
प्यार बिन जीवन है निस्सार

व्यस्त रहे जीवन में निशिदिन
जी तोड़ कर किया परिश्रम
व्यवसाय को पंख लगाये
स्वेद बहाया कितना पल-छिन
प्यार दिया न लिया किसी का
सभी हुआ बेकार
प्यार बिन जीवन है निस्सार।

धन-दौलत तो बहुत बनाया
हर क्षेत्र में नाम कमाया
कोठी-बंगले खड़े कर लिये
परिवार भी खूब उठाया
यदि न जीता प्यार किसी का
है जीवन की हार
प्यार बिन जीवन है निस्सार।

प्यार से टूटे हृदय जुड़ाते
प्यार से बनते रिश्ते-नाते
प्यार में ऐसी अदभुत शक्ति
अनजाने अपने बन जाते
बिना प्यार के दिल छोटा है
प्यार करे विस्तार
प्यार बिन जीवन है निस्सार।

21

पथ प्रशस्त करती हुई चौपाइयां हैं
प्रेरणा देती हुई सच्चाइयां हैं

ध्येय पावन और साधन हों शुचि
एक दिन पा लेंगे जो ऊंचाइयां हैं

कर्म निज निःस्वार्थ हम करते रहें
आयेंगी जीवन में जो अच्छाइयां हैं

वृद्धजन से पायें हम सद्ज्ञान को
जान लें जीवन की जो गहराइयां हैं

सद्विचारों का उजाला पायें हम
दूर हो जायेंगी जो परछाइयां हैं।

22

कुछ 'हाइकु'

('हाइकु' एक संक्षिप्त छंद है जो मूलतः एक जापानी काव्य शैली है। यह छंद केवल सत्रह अक्षरों का होता है और इसमें तीन पंक्तियां होती हैं। प्रथम पंक्ति में पांच, दूसरी पंक्ति में सात, और तीसरी पंक्ति में पांच अक्षर होते हैं। आधे अक्षर की गिनती नहीं होती और न मात्राओं की गिनती होती है। हाहकु में किसी एक भाव या विचार का निर्वहन किया जाता है। आजकल न केवल हिंदी कवि ही हाइकु लिख रहे हैं वरन विदेशों में भी इस विधा का अच्छा प्रचलन है। वैसे तो इस छंद के तुकांत होने की अनिवार्यता नहीं है, पर तुकांत होने पर इसकी रोचकता बढ़ जाती है।)

जीवन बीता
मगर ज्ञान-घट
रहा है रीता

जीवन जाये
जैसे मुटठी से रेत
फिसला जाये

गगन, नीर,
वायु, भूमि, अग्नि से
बना शरीर

कहां से आये
जायेंगे कहां, हम
जान न पाये

सूर्य निकला
किरणें छिटकीं ज्यों
सोना पिघला

सूरज लाल
पूरब में उगा ज्यों
सोने का थाल

चन्द्र दर्शन
नयनाभिराम, हो
शीतल तन

चांदनी रैन
तन-मन शीतल
आंखों को चैन

हमारी दृष्टि
सुन्दर, असुन्दर
की करे सृष्टि

उजली धूप
वर्षा बाद निखारे
धरती रूप

सावन मास
तभी मन भाये जो
कंत हो पास

हम हैं वैसे,
औरों की निगाह में
हम हैं जैसे

अगरबत्ती
महकाये जग को
मिटा के हस्ती

फल न छाया
काहे का ऊंचा यदि
काम न आया

शोभा घर की,
बेटी लाये खुशियां
जग भर की

होवे उद्धार
बच्चों को मिलें यदि
अच्छे संस्कार

बेटा व बेटी
दोनों एक समान
दिखा न हेठी

तन कोमल
पर, रखती नारी
आत्मिक बल

नारी सम्मान
जो नहीं करते, वे
पशु समान

निराली हिन्दी
राष्ट्र की आन, शान
माथे की बिन्दी

एक अनार
किसे-किसे दूं, यहां
तो सौ बीमार

गुणों की खान
बेटी बढ़ाती दोनों
कुलों की शान

दुखिया नारी
कोई न सुने व्यथा
रोती बेचारी

आंसू बहते
अबला हृदय की
व्यथा कहते

फलों से लदी
नम्र हो लचे डाल
सीखें हम भी

हम हों अच्छे
तभी बनेंगे नेक
हमारे बच्चे

सूखा या वर्षा
सदा निर्धन की ही
होती दुर्दशा

प्रभु की लीला
गरीबी में ही होता
है आटा गीला

रिक्षा खींचता
अभागा पसीने से
कुन्बा सींचता

सुबह हुई,
शाम हुई, जिंदगी
तमाम हुई

मित्र था खास
जरूरत पड़ी तो
आया न पास

ये कैसे मित्र
खाया, पिया, खिसके
बड़े विचित्र

गले न दाल
चल, फूट यहां से
बजा न गाल

सत्य ही बोल
झूठ के पांव नहीं
खुलेगी पोल

सद्मार्ग चुन
सत्यमेव जयते
सदा ही गुन

वैदिक रीति
वसुधा ही कुटुम्ब
हमारी नीति

बड़ों का कहा,
सुना, समझा, माना,
लाभ ही गहा

मीठा ही बोल,
प्यार के संबंधों में
विष न घोल

उत्सव तभी
जब प्रेम से मिल
मनायें सभी

बिन बुलाये
उत्सव में जाये तो
मान घटाये

दीवाली आई
दीये, पटाखे, खील,
मिठाई लाई

छोटा-सा दीया
गहन अंधेरे में
उजाला किया

संघर्ष कर
मंजिल पाने तक
बस न कर

तर्क-वितर्क
बिना सार्थकता के
होता है व्यर्थ

मची तबाही
प्रकृति के दोहन
की सज़ा पाई

व्यर्थ है आशा
शठ नहीं जानता
प्यार की भाषा

दोनों ही पाप
अत्याचार करें या
कि सहें आप

काहे की सेवा,
रोज पार्टी बदलें
खाने को मेवा

कवि तो वही
बिना किसी भय के
कहे जो सही

परिवर्तन
नियम प्रकृति का
है चिरन्तन

सिर पे घट,
चलीं सखियां पानी
को पनघट

और अंत में-

दो भारतीय महान कवियों की अंग्रेजी रचनाओं का हिन्दी में काव्यानुवाद

1. गुरुदेव रवीन्द्र नाथ टैगोर की दो रचनाऐं-
   (अ) Where the Mind is without Fear
   (आ) Playthings

2. भारत कोकिला श्रीमती सरोजिनी नायडु की दो रचनाऐं-
   (अ) To Spring
   (आ) Tarry awhile, O Death!

गुरुदेव रवीन्द्र नाथ टैगोर की रचना

Where the Mind is without Fear

Where the mind is without fear
    and the head is held high,
Where knowledge is free,
Where words come out from the depth of truth,
Where the world has not been broken into
    fragments of narrow domestic walls,
Where clear stream of reason has not lost its way
    into the dreary sand of dead habits,
Where tireless striving stretches its arms towards
    perfection,
Where the mind is led forward by Thee into
    ever widening thought and action,
Into that heaven of freedom, my father, let my
    country awake.

23

काव्यानुवाद

मन हो भय से मुक्त जहां पर
और गर्व से सिर उन्नत हो,
ज्ञान सभी को सहज सुलभ हो,
मन और वाणी सत्य सिक्त हो,
जहां न विश्व संकीर्ण हितों में
खण्ड-खण्ड होकर विभक्त हो,
जहां विवेक की निर्मल धारा
मृत प्रथाओं के मरूथल में
बहे अबाध, नहीं अवरूद्ध हो,
अथक प्रयासों के बल पर ही
पूर्ण उपलब्धि जहां लक्ष्य हो,
जहां करे तू मन को अग्रसर
ऐसे कर्म, विचारों के प्रति
व्यापकता जो पायें निरन्तर,
स्वतन्त्रता के उसी स्वर्ग में
मेरे देश को, प्रभु, जागृत कर।

गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर की एक अन्य रचना

Playthings

Child, how you are sitting in the dust
playing with a broken twig all the morning,
I smile at your play with that little bit of a broken twig
I am busy with my accounts
adding up figure by the hour.
Perhaps you glance at me and think,
"What a stupid game to spoil your morning with!"
Child, I have forgotten the art of being absorbed
in sticks and mud pies,
I seek out costly playthings and gather lumps of
gold and silver.
With whatever you find you create your glad games,
I spend both my time and my strengh
over things I can never obtain.
In my frail canoe I struggle to cross
the sea of desire, and forget that I,
too, am playing a game.

24

काव्यानुवाद

बच्चे, तुम कितने खुश होकर
खेल रहे बैठे मिट्टी में,
टूटी टहनी लेकर के ही
बिता दिया है सभी सबेरा

मुस्काता मैं देख रहा हूं
मगन तुम्हें टूटी टहनी में,
मैं व्यस्त धन के अर्जन में
मुझको तो माया ने घेरा

शायद सोच रहे तुम मुझको
देख कि मैं हूं कैसा मूरख,
नासमझी के खेल में कैसे
गंवा रहा हूं सुखद सबेरा

पर, बच्चे, मै भूल चुका हूं
टहनी-कंकड़ में रम जाना
मूल्यवान खिलौने, सोना,

चांदी बना ध्येय अब मेरा

जो कुछ भी मिल जाता तुमको
खेल गढ़ो उससे मन चाहे,
मैं शक्ति और समय गंवाता
फिर भी लक्ष्य दूर है मेरा

जीर्ण नाव में जूझ रहा हूं
तरने इच्छाओं का सागर,
और भूल जाता हूं यह मैं
खेल ही तो है जीवन मेरा

भारत कोकिला श्रीमती सरोजिनी नायडु की रचना

The coming of Spring

O Spring! I cannot run to greet
Your coming as I did of old
Clad in a shining veil of gold
With champa buds and blowing wheat
And silver anklets on my feet.

O Sweet! I am not false to you,
Only my weary heart of late
Has fallen from its high estate
Of laughter and has lost the clue
To all the vernal joys it knew.

There was a song I used to sing,
But now I seek in vain, in vain
For the old lilting glad refrain
I have forgotten every thing
Forgive me, O my comrade Spring.

25

काव्यानुवाद

हे बसन्त! अब नहीं ललक कर
मैं कर पाऊंगी अभिनन्दन
जैसा मैं करती थी पहले
पहन चमकती साड़ी स्वर्णिम
चम्पा की कलियां, गेहूं की
लहराती बालें कर में ले
चांदी के घुंघरू पैरों में
बजते जाते झनन-झनन-झन!

प्रियतम, ऐसा समझ न लेना
मेरी तुझसे प्रीति थी झूठी
केवल समय के बटमारों ने
मेरी खुशी की गठरी लूटी
पीड़ा से मन व्याकुल मेरा

भूला सब बासन्ती खुशियां
जन मानस को देख दुःखी
अब मेरा मन करता है क्रन्दन।

प्रिय, जब तू आता था पहले
तन-मन पुलक-पुलक जाता था
एक गीत तब बड़ा मधुर-सा
होठों पर बरबस आता था
बार-बार अब याद करूं पर
धुन वह मीठी याद न आये
क्षमा मुझे करना, प्रिय साथी,
भूल गया सब कुछ बोझिल मन
हे बसन्त, अब नहीं ललक कर
मैं कर पाऊंगी अभिनन्दन।

भारत कोकिला श्रीमती सरोजिनी नायडु की एक अन्य रचना

The Poet to Death

Tarry awhile, O Death,
I cannot die
While yet my sweet life
burgeons with its spring,
Fair is my youth, and
rich the echoing boughs
Where dhadikulas sing.

Tarry awhile, O Death,
I cannot die
With all my blossoming
hopes unharvested,
My joys ungarnered
all my songs unsung,
And all my tears unshed.

Tarry awhile till I
am satisfied
Of love and grief,
of earth and altering sky,
Till all my human
hungers are fulfilled,
Death, I cannot die!

26

काव्यानुवाद

मृत्यु, ठहर जा तनिक
अभी मैं मर न सकूंगी।

मेरे जीवन में बहार बसन्ती छाई
महक रही मेरी यह अभिनव तरूणाई
गूंज रहीं चिड़ियों की मीठी तानों से
लदी हुई डालें, पुष्पों से बौराई
विस्मृत इनको कर न सकूंगी
ठहर, अभी मैं मर न सकूंगी।

मेरी आशाओं पर मोहक फूल खिले अब
उन्हें बीनना अभी, सहेजनी खुशियां हैं सब
गीत अभी रह गये बहुत से अनगाये
अश्रु रहे अनबहे कि अटका अभी नीर दृग,
अनदेखा यह कर न सकूंगी
ठहर, अभी मैं मर न सकूंगी।

जब तक सारे गीत न गा लूं
मैं जी भर के,
प्रेम-विरह के, धरा के,
इस नीले अम्बर के

जब तक तृप्त न कर लूं
सारी अभिलाषायें
सभी अधूरे सपने अपने
मन भर के
तब तक तुझको वर न सकूंगी
ठहर, अभी मैं मर न सकूंगी।

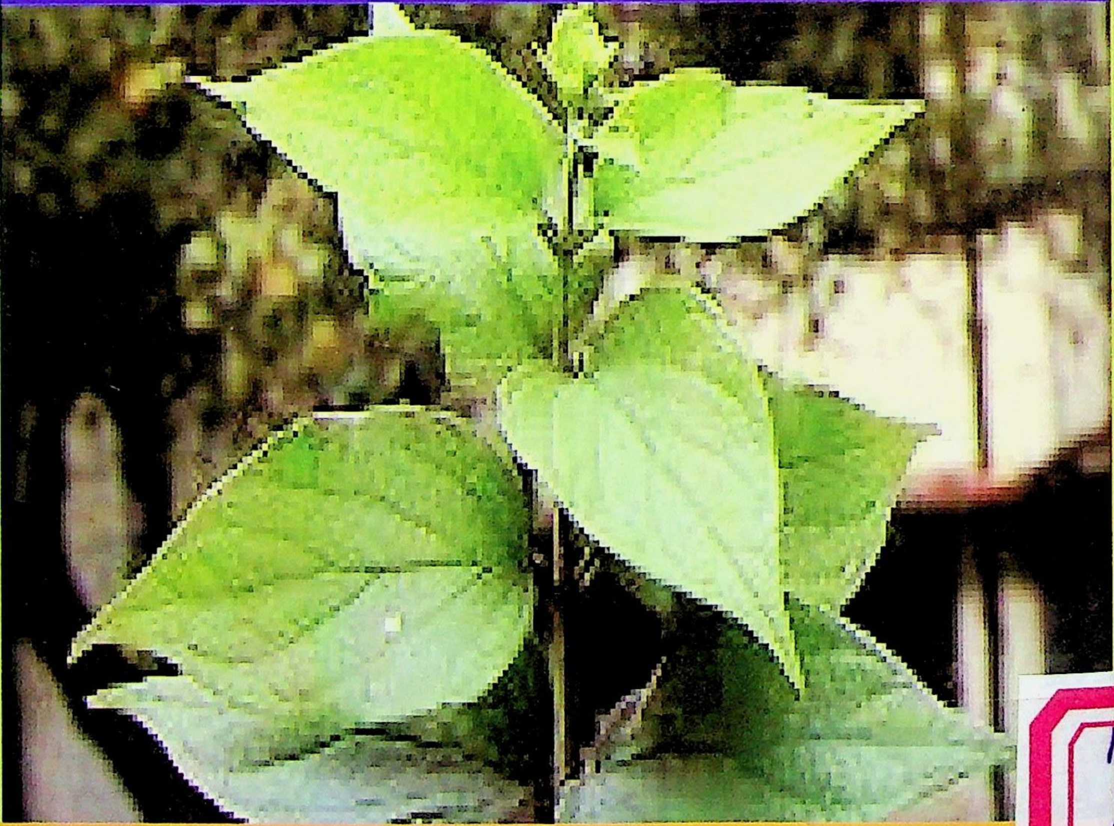
डॉ० राम स्वरूप आर्य, बिजनौर
की स्मृति में सादर भेंट–
हरप्यारी देवी, ... प्रकाश आर्य
संतोष कुमारी, राज प्रकाश आर्य



वी.पी. गुप्ता

प्यार से टूटे हृदय जुड़ाते
प्यार से बनते रिश्ते-नाते
प्यार में ऐसी अद्भुत शक्ति
अनजाने अपने बन जाते
बिना प्यार के दिल छोटा है
प्यार करे विस्तार
प्यार बिन जीवन है निस्सार।

फूल हरसिंगार के



अविचल प्रकाशन
बिजनौर (उ.प्र) / हल्द्वानी, उत्तराखण्ड
इमेल : avichalprakashan@gmail.com